स्वतंन्त्रता – मसीह के न्याय और व्यवस्था का सिंहासन

फ्रेंकलीन द्वारा तैयार नोट्स

लूका 4:18	उसने मुझे भेजा है कि मैं बन्दियों को **छुटकारे** का ... सन्देश दूं।
यूहन्ना 8:32	और तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें **स्वतंत्र** करेगा।
यूहन्ना 8:36	इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा तो तुम **सचमुच स्वतंत्र** हो जाओगे।
गलातियों 5:1	मसीह ने स्वतन्त्रता के लिए हमें **स्वतन्त्र** किया है।
गलातियों 5:13	हे भाइयों, तुम **स्वतन्त्र** होने के लिए बुलाए गए हो।

विश्वासी होने के नाते, हमें हमारे छुटकारे , स्वतन्त्रता को समझना आवश्यक है।

यीशु मसीह में विश्वास करने से पहले हम : "**पाप के दास**" थे।

★ "... तुम जो **पाप के दास** थे।" रोमियों 6:17

★ "मैं शारीरिक हूं तथा **पाप के हाथों बिका** हुआ हूं।" रोमियों 7:14

★ "तुम तो उन अपराधों और पापों के कारण **मरे** हुए थे।" इफिसियों 2: 1–3

क्योंकि पाप था और हमें नष्ट कर रहा था, परमेश्वर ने अपने प्रेम और दया में व्यवस्था दी।

★ गलातियों 3:19 तो फिर व्यवस्था की क्या आवश्यकता रही ? वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई ..."

★ गलातियों 3:23 परन्तु विश्वास में आने के पूर्व हम (1) व्यवस्था के **संरक्षण** में बन्दी थे, और (2) विश्वास के प्रकट होने तक हम उसी के **नियत्रण** में रहे।

1. फ्रूरेओ ; प्रतीकात्मक रीति से, घेरे में रखना, रक्षा करना ; रक्षक सेना के समान।

   बाइबल सोसाइटी का अनुवाद – रखवाली करना IBP – व्यवस्था के संरक्षण

2. सूंगक्लीओ ; बन्धन में ; बाड़े में

गलातियों 3:24 इस प्रकार मसीह तक पहुंचने के लिए व्यवस्था हमारी **शिक्षक** बन गई है जिससे हम विश्वास द्वारा धर्मी गिने जाएं।

❖ व्यवस्था हमारा **स्कूल मास्टर** / **बच्चों का प्रशिक्षक** या **बच्चों का नेता** / था, एक **अभिभावक** जो बच्चों को स्कूल ले जाता है। (शाब्दिक अर्थ)

स्वतन्त्रता

बच्चों को स्कूल मास्टर, शिक्षक, अभिभावक की आवश्यकता होती है कि उन पर ध्यान रखा जाए, यह सिखाया जाए कि क्या सही है क्या गलत। उन्हें बताया जाए "गली में नहीं खेलना।" "गरम तवे को मत छूना"। हमारा स्वर्गीय पिता नहीं चाहता कि हमें चोट पंहुचे।

इसलिए व्यवस्था हमें बताती है :

1. पाप क्या है :

   रोमियों 7:7 व्यवस्था के बिना मैं पाप को न जान पाता, क्योंकि यदि व्यवस्था न कहती, "लालच मत कर," तो मैं लालच के विषय में न जान पाता।

2. धार्मिकता क्या है :

   रोमियों 7:12 व्यवस्था पवित्र है और आज्ञा भी पवित्र, खरी और उत्तम है।

3. और मुझे शैतान के फंदे से बचाए रखती है जब तक कि मुझे पवित्र आत्मा द्वारा पूर्ण अगुवाई न मिले।

गलातियों 4:4-7 परन्तु जब समय पूरा हुआ तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से उत्पन्न हुआ और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, कि **जो लोग व्यवस्था के अधीन** (सुरक्षा के घेरे में बन्द) **है उन्हें मुल्य दे कर छुड़ा ले**, और हम को लेपालक पुत्र (बच्चे से पुत्र में बदल जाना) होने का अधिकार प्राप्त हो। इसलिए कि तुम पुत्र हो, परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो 'हे अब्बा ! हे पिता ! कह कर पुकारता है, हमारे हृदयों में भेजा है। **इसलिए अब तू दास नहीं,** परन्तु पुत्र है और जब पुत्र है तो परमेश्वर के द्वारा उत्तराधिकारी भी।

★ यीशु "व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ"(आदर्श के रुप में), हमारे लिए उसमें रहा – व्यवस्था तोड़ने का दण्ड (मृत्यु) चुकाया, हमारे लिए मरा – हमारे लिए उसने व्यवस्था को पूर्ण किया (मत्ती 5:17), अत: हमें "जो व्यवस्था के (उसके सुरक्षा के घेरे में बन्द)अधीन थे"छुड़ाया।
(मत्ती 5:17 "यह न समझो कि मैं व्यवस्था या नबियों की पुस्तकों को नष्ट करने आया हूं। नष्ट करने नहीं, परन्तु उसे पूर्ण करने आया हूं।")

★ जब हम विश्वास करते हैं – हमारे पाप क्षमा हो जाते हैं – हमें उसकी धार्मिकता का दान प्राप्त होता है (2 कुरि 5:21) – अब पवित्र आत्मा, हम में आ सकती और आती है – "अब तू दास नहीं, परन्तु पुत्र है" – "उत्तराधिकारी" जो **सब कुछ मुफ्त और स्पष्टता से** प्राप्त करता है ! हल्लिलुयाह !

अत: हम स्वतन्त्र हैं !

स्वतन्त्रता

1. हम स्वतन्त्र है पाप के अनन्त दण्ड – मृत्यु से ।

★ रोमियों 5:8 परन्तु परमेश्वर अपने प्रेम को हमारे प्रति इस प्रकार प्रदर्शित करता है कि जब हम पापी ही थे **मसीह हमारे लिए मरा**।

★ रोमियों 6:23 क्योंकि पाप की मज़दूरी तो **मृत्यु** है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु में **अनन्त जीवन** है।

★ 1 थिस्सलुनीकियों 5:10 वह **हमारे लिए मर गया** कि हम सब मिलकर उसके साथ जीवित रहें।

★ रोमियों 8:1 –2 अतः अब उन पर जो मसीह यीशु में हैं, दण्ड की आज्ञा नहीं। क्योंकि **जीवन** के आत्मा ने **मसीह यीशु में तुम्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया है**।

पद 3 ''क्योंकि जो काम व्यवस्था, शरीर के द्वारा दुर्बल होते हुए, न कर सकी, उस काम को परमेश्वर ने किया ; अर्थात, अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में तथा पाप के लिए बलिदान होने को भेज कर, शरीर में **पाप को दोषी** ठहराया।

2 कुरिन्थियों 5:21 जो पाप से अनजान था, उसी को उसने **हमारे लिए पाप ठहराया** कि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।

व्यवस्था हमारी समस्या नहीं। हमारे शरीर की कमज़ोरी तथा पाप हमारी समस्या थी (रोमियों 7:14–21)। व्यवस्था ने हमारी सहायता की कि हम अपने पाप देख सकें।

वे जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं – उद्धार के लिए उस पर भरोसा करते हैं – जो अविश्वास के पाप का परिणाम–स्वरुप मृत्यु से स्वतन्त्र है।

- यूहन्ना 8:51 ; 14:23 ; 17:6 ; प्रेरितों के काम 2:9 तथा और भी कई पद।

2. हम **अनन्त जीवन के लिए** व्यवस्था का पालन करने से स्वतन्त्र हैं, यद्यपि व्यवस्था का यह उद्देश्य कभी भी नहीं था परन्तु यह मनुष्य की गलतफ़हमी थी।

★ रोमियों 6:23 ''... परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु में **अनन्त जीवन** है।

★ रोमियों 3:20 ''क्योंकि उसकी दृष्टि में कोई प्राणी व्यवस्था के कार्यों से धर्मी नहीं ठहरेगा ; क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप का बोध होता है।

यही व्यवस्था का उद्देश्य है : ''पाप का बोध''

★ गलातियों 2:16 हम जानते हैं कि **मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं परन्तु मसीह यीशु पर विश्वास करने से धर्मी ठहराया जाता है।** इस कारण हमने भी मसीह यीशु पर **विश्वास किया** है कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं परन्तु मसीह पर **विश्वास करने से धर्मी** ठहराएं जाएं। क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई मनुष्य धर्मी नहीं ठहराया जाएगा।

★ गलातियों 5:1 मसीह ने स्वतन्त्रता के लिए हमें **स्वतन्त्र** किया है, इसलिए दृढ़ रहो और दासत्व के जुए में फिर न जुतो।

गलातिवासियों और हमारे लिए : ''दासत्व का जुआ'' यह सोचते हुए भारी बोझ था कि उन्हें अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए व्यवस्था को रखना और पूर्ण करना पड़ेगा।

3. हम पाप के दासत्व से स्वतन्त्र है तथा अब हम पाप के दास न रहें।

रोमियों 6:17 –20 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि तुम जो **पाप के दास थे,** अब हृदय से उस प्रकार की शिक्षा के आज्ञाकारी हो गए जिसके लिए तुम समर्पित हुए थे, (18) और तुम **पाप से छुड़ाए जाकर** धार्मिकता के दास हो गए हो। (19) ... जिस प्रकार तुमने अपने अंगों को अशुद्धता और व्यवस्था उल्लंघन के दास होने के लिए सौंप दिया था परिणामस्वरुप व्यवस्था उल्लंघन और अधिक बढ़ गया, उसी प्रकार **अब अपने अंगों को धार्मिकता के दास होने के लिए समर्पित कर दो** कि जिसका परिणाम पवित्रता हो। (20) क्योंकि जब तुम पाप के दास थे तो धार्मिकता की ओर से स्वतन्त्र थे।

पद 22 ''परन्तु अब पाप से स्वतन्त्र हो कर और परमेश्वर के दास बन कर तुम्हें यह फल मिला जिसका परिणाम पवित्रता और जिसका अन्त अनन्त जीवन है।''

मसीह यीशु में – जो विजयी हुआ तथा हमें वह विजय दी है – हम पाप से स्वतन्त्र और मृत्यु से स्वतन्त्र चाल चल सकते हैं।

परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हमें प्रभु यीशु मसीह के द्वारा विजयी करता है।

1 कुरिन्थियों 15:57।।

4. हम स्वयं से स्वतन्त्र हैं।

★ रोमियों 6: 5–6 ''यह जानते हुए कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया।

★ इफिसियों 4:22 ''तुम अपने पिछले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को उतार डालो।'' (24) और नए मनुष्यत्व को पहिन लो जो परमेश्वर के अनुरुप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है।

★ कुलुस्सियों 3:1–10

5. हम यीशु मसीह की आज्ञा मानने के लिए स्वतन्त्र हैं तथा अब हम पाप के दास नहीं हैं।

रोमियों 6:12–14 इसलिए पाप को अपने मरणहार शरीर में प्रभुता **न करने दो,** कि तुम उसकी लालसाओं को पूरा करो ,(13) और न अपने शरीर के अंगों को अधर्म के हथियार बनाकर पाप को सौंपो, परन्तु अपने आपको मृतकों में से जीवित जानकर अपने अंगों को धार्मिकता के हथियार होने के लिए परमेश्वर को सौंप दो।(14) तब पाप तुम पर प्रभुता करने नहीं पाएगा, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं, परन्तु अनुग्रह के अधीन हो।(16) क्या तुम नहीं जानते कि किसी की आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आप को दासों के समान सौंप देते हो, तो **जिसकी आज्ञा मानते हो उसी के दास बन जाते हो – चाहे पाप के जिसका परिणाम मृत्यु है, चाहे आज्ञाकारिता के जिसका परिणाम धार्मिकता है?**

यूहन्ना 14:15 "यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे।"

यूहन्ना 14:21 "जिसके पास मेरी आज्ञाएं हैं और वह उनका पालन करता है, वही मुझसे प्रेम करता है, और जो मुझसे प्रेम करता है, उस से मेरा पिता प्रेम करेगा और मैं उससे प्रेम करुंगा और अपने आपको उस पर प्रकट करुंगा।"

यूहन्ना 14:23–24 "यदि कोई मुझ से प्रेम करता है तो वह मेरे वचन का पालन करेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम करेगा, और हम उसके पास आएंगे तथा उसके साथ निवास करेंगे। जो मुझ से प्रेम नहीं करता, वह मेरे वचन का पालन नहीं करता। और जो वचन तुम सनते हो वह मेरा नहीं वरन् पिता का है जिसने मुझे भेजा।

यूहन्ना 15:10–11 "यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे तो मेरे प्रेम में बने रहोगे, वैसे ही जैसे मैंने अपने पिता की आज्ञाओं का पालन किया है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं। ये बातें मैंने तुम से इसलिए कहीं हैं कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।

1 यूहन्ना 5:2 जब हम परमेश्वर से प्रेम करते और उसकी आज्ञाओं का **पालन** करते हैं तो इसी से हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम करते हैं।

प्रेम, उद्धार प्राप्त करने की प्रेरणा है – न कि कार्य या प्रयत्न।
"परमेश्वर प्रेम है" और परमेश्वर, पवित्र आत्मा के व्यक्ति में "हम में" है, वह हमें प्रेरणा (प्रेम)देता है तथा यीशु की आज्ञा मानने की योग्यता।

1 यूहन्ना 2:3 –5 यदि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो इसी से हमें ज्ञात होता है कि हम उसे जान गए हैं। जो कहता है, "मैं उसे जान गया हूं" और उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं ; परन्तु जो उसके वचन का पालन करता है, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हो चुका है। इसी से हम जानते हैं कि हम उसमें हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हम स्वतन्त्र नहीं हैं :

1. "व्यवस्था की मांग" से। यह अभी भी परमेश्वर के राज्य के मार्गदर्शक सिद्धान्त के समान कायम है।

रोमियों 8:1–8 अतः अब उन पर जो मसीह यीशु में हैं दण्ड की आज्ञा नहीं। क्योंकि जीवन के आत्मा ने मसीह यीशु में तुम्हें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया है। क्योंकि जो काम व्यवस्था, शरीर के द्वारा दुर्बल होते हुए, न कर सकी, उस काम को परमेश्वर ने किया; अर्थात, अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में तथा पाप के लिए बलिदान होने को भेज कर, शरीर में पाप को दोषी ठहराया।

जिससे कि व्यवस्था की मांग हम में पूरी हो सके जो शरीर के अनुसार नहीं परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं। क्योंकि शारीरिक मनुष्य शरीर की बातों पर मन लगाते हैं परन्तु अध्यात्मिक तो परमेश्वर की बातों पर मन लगाते हैं। शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है; (पद 7) क्योंकि शारीरिक मन तो परमेश्वर से शत्रुता करता है। वे न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है और न ही हो सकता है। (पद 8) जो शारीरिक है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। (पद 9) यदि वास्तव में परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है, तो तुम शरीर में नहीं, वरन् आत्मा में हो।

नए नियम के विश्वासी होने के नाते, जब कि पवित्र आत्मा "हम में " है (पद 9) हमारे पास सामर्थ और योग्यता है :

★ कि प्रत्येक विचार को बन्दी बना कर मसीह का आज्ञाकारी बना दें। 2 कुरिन्थियों 10:5 ।

★ कि अपने को परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन बना दें (ऊपर दिया गया 7 पद)।

★ कि हम व्यवस्था का पालन करें और पाप रहित चाल चलें, जो अन्धकार के राज्य से मुक्त हो तथा परमेश्वर को प्रिय हो।

रोमियों 8:4 "जिससे कि व्यवस्था की मांग हम में पूरी हो सके जो शरीर के अनुसार नहीं परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं।"

पवित्र आत्मा तुम्हें धार्मिकता के मार्ग में ले जाएगा, और ... "वह दुष्ट तुम्हें छूने न पाएगा।" (1 यूहन्ना 5:18)

2. हम पाप के सांसारिक परिणामों से स्वतन्त्र नहीं हैं।

★ युहन्ना 5:14 यीशु ने कहा, "... फिर कभी पाप न करना,ऐसा न हो कि इससे भी कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।"

★ इफिसियों 4:27 शैतान को अवसर न दो।

जब हम परमेश्वर के राज्य के नियमों की आज्ञा नहीं मानते या उसे त्याग देते हैं, तो

हम पाप में और अन्धकार के राज्य में चलते हैं। शैतान को आक्रमण करने का वैध अधिकार दे देते हैं।

★ 1 पतरस 5:8 संयमी और सचेत रहो। तुम्हारा शत्रु शैतान गर्जने वाले सिंह की भांति इस ताक में रहता है कि किसको फाड़ खाए।

★ भजन संहिता 89:27–34 मैं उसे अपना पहलौठा और जगत के सब राजाओं का प्रधान बनाऊंगा। मैं अपनी करुणा उस पर **सदा** बनाए रखूंगा, और **मेरी वाचा उसके साथ अटल रहेगी।** मैं उसके वंश को **सदा सर्वदा** और उसके सिंहासन को स्वर्ग के दिनों के बराबर बनाए रखूंगा। यदि उसके वंशज मेरी व्यवस्था को त्याग दें, और मेरे नियमों पर न चलें, यदि वे मेरी विधियों का उल्लंघन करें, और मेरी आज्ञाओं का पालन न करें, तो **मैं उनके अपराध का दण्ड सोंटे से और उनके अधर्म का दण्ड कोड़ों से दूंगा। परन्तु मैं अपनी करुणा उस पर से न हटाऊंगा, और न अपनी सच्चाई त्यागकर झूठा व्यवहार करुंगा। मैं अपनी वाचा को नहीं तोड़ूंगा, और न अपने होंठ से निकली बातों को बदलूंगा।**

3. हम अपनी इच्छानुसार कोई भी कार्य करने को स्वतन्त्र नहीं हैं।

1 पतरस 2:16–17 **स्वतन्त्र मनुष्यों के समान** कार्य करो, पर अपनी स्वतन्त्रता को बुराई के लिए आड़ **न** बनाओ। परमेश्वर के दासों की भांति उसका उपयोग करो। सब का आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो, परमेश्वर का भय मानो, और राजा का सम्मान करो।

गलातियों 5:13–14 हे भाइयों , तुम स्वतन्त्र होने के लिए बुलाए गए हो। **इस स्वतन्त्रता को शारीरिक इच्छा पूर्ण करने का साधन न बनाओ, परन्तु प्रेम से** एक दूसरे की सेवा करो। क्योंकि सम्पूर्ण व्यवस्था इस कथन के एक ही शब्द में पूर्ण हो जाती है : "तू अपने पड़ोसी से अपने समान **प्रेम** रख।"

यह नए नियम के विश्वासियों के लिए व्यवस्था का मुख्य विषय और उद्देश्य है।

उन लोगों <u>के लिए</u> और उन लागों <u>के साथ</u> जिनके लिए यीशु मरा, अपना जीवन प्रेम में कैसे बिताएं।

यह है : – **लोगों के साथ सही सम्बन्ध।**

मसीहयत बहुत कुछ सम्बन्धों के बारे में है !

यही व्यवस्था का उद्देश्य है

- 1 पतरस 2:13 प्रत्येक मानवीय शासन प्रबन्ध के अधीन रहो
- रोमियों 12:10 भ्रातृ–भाव से एक दूसरे से प्रेम करो, परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो।

- इफिसियों 4:32 एक दूसरे के प्रतिदयालु ... एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।
- इफिसियों 5:21 एक दूसरे के अधीन रहो।

यूहन्ना 13:34–35 मैं तुम्हें नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो। जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि तुम आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।

जब हमारे एक दूसरे के साथ सम्बन्ध टूट जाते हैं – यह पाप होता है – पवित्र आत्मा शोकित होती है (इफिसियों 4:30), तथा हमें अपनी गलतियां मान कर और मेल कर लेना चाहिए, कि हमारा सम्बन्ध उस व्यक्ति के साथ पुनःस्थापित हो जाए।

मत्ती 19:18–19 यीशु ने कहा, "हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चेरी न करना, झूठी साक्षी न देना, अपने पिता और माता का आदर करना और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।

उपरोक्त परमेश्वर के राज्य के नियम या व्यवस्था हैं।जब हम इन नियमों का पालन नहीं करते, तो अव्यवस्था / हानि /दुख / तबाही और बदनामी आ जाती है तथा व्यक्ति, परिवार या राष्ट्र विघटन की ओर जाता हैं।

- यही तो अमेरिका समेत कई देशों में हो रहा है।

बिलकुल वैसे ही जैसे कि हमारे शहर, राज्य और देश में हमारे लिए कानून व्यवस्था होती है ताकि हम शान्ति, मैत्री भाव, धार्मिकता में एक दूसरे के साथ रह सकें।

उदाहरण: चौराहे पर कानून व्यवस्था – यदि पालन करोगे – दूसरे को दुर्घटना या क्षति नहीं होगी। हम सब आसानी से एक साथ चल सकते हैं।

रोमियों 13:8 –10 जो **पड़ोसी से प्रेम करता है, उसने व्यवस्था को पूर्ण** किया है। इस कारण, "न तो तू व्यभिचार करना, न हत्या करना, न चोरी करना, न ही लालच करना," और इनके अतिरिक्त यदि और कोई आज्ञा हो, तो सब का सारांश इस कथन में पाया जाता है, "तू अपने पड़ोसी से प्रेम रख।" **प्रेम पड़ोसी की बुराई नहीं करता, इसलिए प्रेम करना व्यवस्था को पूर्ण करना है।**

मत्ती 5:18–19 मैं तुम सच कहता हूं कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, व्यवस्था में से एक भी मात्रा या बिन्दू भी, जब तक कि सब कुछ पूरा न हो जाए, नहीं टलेगा। इसलिए जो भी इन छोटी से छोटी **आज्ञाओं को तोड़ेगा** और **ऐसी ही शिक्षा दूसरों को देगा**, वह **परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा कहलाएगा**; परन्तु जो उसका पालन करेगा और दूसरों को भी सिखाएगा, वह परमेश्वर के राज्य में महान कहलाएगा।

फिर यह पद हमें स्पष्टता से बताता है कि व्यवस्था तोड़ने के द्वारा हम अपने उद्धार को नहीं खोते हैं परन्तु हम प्रभु को अप्रसन्न करते हैं, स्वर्ग का प्रतिफल खो देते हैं, तथा इस पृथ्वी पर अपने और दूसरों के ऊपर लज्जा और क्षति लाते हैं

4. हम अपना जीवन जीने के लिए **स्वतन्त्र नहीं हैं** कि दूसरो को उसके (परमेश्वर) विरुद्ध बोलने का कारण बनें।

- रोमियों 22–24 तू जो व्यवस्था पर गर्व करता है, क्या **तू व्यवस्था का उल्लंघन करके परमेश्वर का अनादर** नहीं करता? क्योंकि लिखा है, " तुम्हारें कारण परमेश्वर के नाम की निन्दा गैर यहूदियों में की जाती है।"

उदाहरण : टी.वी. प्रचारक, कोई भी।

1 कुरिन्थियों 8:9 सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी यह **स्वतन्त्रता निर्बलों के लिए ठोकर** का कारण बन जाए।

1 कुरिन्थियों 8:12 –13 इस प्रकार भाइयों के विरुद्ध अपराध करने और उनके निर्बल विवेक को ठेस पहुंचाने के कारण, तुम मसीह के विरुद्ध पाप करते हो। इसलिए यदि भोजन मेरे भाई को **ठोकर** खिलाता है तो मैं फिर कभी मांस नहीं खाऊंगा, जिस से मैं अपने भाई के लिए ठोकर का कारण न बनूं।

- ❖ मेरी स्वतन्त्रता की सीमा उतनी ही है जहां से दूसरे की स्वतन्त्रता आरम्भ होती है।
- ❖ दूसरे को ठेस लगने से पहले मेरी स्वतन्त्रता समाप्त हो जाती है।

व्यवस्था अब भी हमारे साथ है कि हमें **सुरक्षा के बाड़े में सम्भाले रखे,** – परमेश्वर का राज्य – हमें सुरक्षित रखता है, शत्रुओं से **मुक्त,** अपने को चोट पहुंचाने से **मुक्त,** और दूसरो को चोट पहुंचाने से **मुक्त।**

रोमियों 7:12 इसलिए व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी पवित्र, खरी, और उत्तम है। (14) व्यवस्था आत्मिक है।

1 तीमुथियुस 1:8 परन्तु हम जानते हैं कि यदि कोई व्यवस्था का उचित उपयोग करे तो व्यवस्था भली है।

व्यवस्था का पालन करने के साथ आशिषें आती हैं।

याकूब 1:25 परन्तु जो व्यक्ति **स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था** को लगन से देखता रहता है और **उस पर बना रहता है,** वह सुन कर भूल नहीं जाता, वरन् फलप्रद कार्य करता है – इसलिए **वह आशिष पाएगा।**

भजन संहिता 1:1–3 क्या ही **धन्य** है वह मनुष्य जो दुष्टों की सम्मति पर नहीं चलता, न पापियों के मार्ग में खड़ा होता, और न ठट्ठा करने वालों की बैठक में बैठता है। परन्तु **वह तो यहोवा की व्यवस्था से आनन्दित होता** और **उसकी व्यवस्था** पर रात–दिन **मनन** करता रहता है। वह उस वृक्ष के समान है जो जल धाराओं के किनारे लगाया गया है, और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं : इसलिए **जो कुछ वह मनुष्य करता है वह उसमें सफल होता है।**

भजन संहिता 19:7–11 **यहोवा की व्यवस्था** सिद्ध है, जो **प्राण को पुनःनया** कर देती है ; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, जो भोलों को **बुद्धिमान** बना देते हैं। यहोवा के **उपदेश** सही हैं, जो हृदय को आनन्दित कर देते हैं ; यहोवा की **आज्ञा** शुद्ध है, जो आंखों को ज्योतिर्मय कर देती है। यहोवा का भय निर्मल

है, जो अनन्त काल तक बना रहता है ; यहोवा की विधियां सत्य हैं, और पूर्णतः धर्ममय हैं। वे सोने से, हां बहुत से ताए हुए सोने से भी अधिक मनभावने हैं ; वे तो मधु से, यहां तक कि टपकने वाले छत्ते से भी मधुर हैं। इनके द्वारा तो तेरे दास को चेतावनी मिलती है ; **इनका पालन करने से बड़ा लाभ होता है**।

यहोशु 1:8 **व्यवस्था की यह पुस्तक** तेरे मुंह से कभी दूर न हो, परन्तु इस पर दिन रात ध्यान करते रहना जिससे तू उसमें लिखी हुई बातों के अनुसार आचरण करने के लिए सावधान रह सके। **तब** तू अपने मार्ग को **सफल** बना सकेगा और **सफलता प्राप्त** करेगा।

मसीह का न्याय सिंहासन !

याकूब 2:12 तुम उन लोगों की भांति बोलो और काम करो **जिनका न्याय** स्वतन्त्रता की व्यवस्था के अनुसार होगा।

विश्वासी होने के नाते हम जिस प्रकार का जीवन दूसरों के साथ जीतें हैं उसका न्याय किया जाएगा।

2 कुरिन्थियों 5:10 क्योंकि हम **सब को** मसीह के न्याय आसन के समक्ष उपस्थित होना अवश्य है कि प्रत्येक को अपने भले या बुरे कामों का **बदला मिले** जो उसने देह के द्वारा किए।

- ✎ हम वही प्राप्त करेंगे जिसके हम योग्य हैं
- ✎ कि प्रत्येक वह प्राप्त करे जो उसको देय हो।

  - पौलुस ने यह कुरिन्थिुस की कलीसिया के विश्वासियों के लिए लिखा, अतः यह प्रत्येक विश्वासियों के लिए सत्य है।
  - मसीह का न्याय सिंहासन केवल विश्वासियों के लिए है।
  - न्याय का बड़ा श्वेत सिंहासन अविश्वासियों के लिए है। प्रकाशितवाक्य 20:11–15।

यह अनन्त जीवन के लिए न्याय या निर्णय लेना नहीं है।

- ➢ निर्णय पहले ही लिया जा चुका है।

रोमियों 8:2–3 ... परमेश्वर ने किया; अर्थात, अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में तथा पाप के लिए बलिदान होने को भेज कर, शरीर में पाप को *दोषी ठहराया।

*(विरुद्ध में न्याय करना, दण्डाज्ञा, दोषी करार, धिक्कारना)

2 कुरिन्थियों 5:21 जो पाप से अनजान था, उसी को उसने **हमारे लिए पाप ठहराया** कि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।

रोमियों 4:7–8 धन्य हैं वे जिनके अपराध क्षमा हुए, और जिनके पाप **ढांपे** गए। धन्य है वह मनुष्य जिसके **पाप का लेखा प्रभु नहीं लेगा**।

कुलुस्सियों 2:13–15 तब उसने मसीह के साथ तुम्हें भी जीवित किया। उसने **हमारे सब अपराधों को क्षमा किया**। और विधियों का वह *अभिलेख जो हमारे नाम पर और हमारे विरुद्ध में था, मिटा डाला, और उसे ,क्रूस पर कीलों से जड़ कर हमारे सामने से हटा दिया।

*डोगमा – एक कानून (नागरिक, धार्मिक रीति या कलीसियाई तौर पर)

यह अनन्त जीवन के लिए न्याय या निर्णय लेना नहीं है।
परन्तु यह इस बात का न्याय है कि हमने मसीही तौर पर अपना जीवन कैसे बिताया।

मत्ती 18:6 परन्तु जो कोई इन छोटे में से जो मुझ पर विश्वास रखते हैं एक को भी ठोकर खिलाए तो उचित होता कि उसके गले में चक्की का भारी पाट लटका कर उसे समुद्र की गहराई में डुबा दिया जाता।

यीशु अपने लिए हमारी क्षमा / उद्धार /छुड़ौती का इतना अधिक मुल्य चुकाने के बाद – और फिर यदि हम उनके साथ जिनसे वह बहुत प्रेम करता है, ऐसा कुछ करें कि जिससे वे ठोकर खाएं – इससे वह प्रसन्न नहीं होता।

1 कुरिन्थियों 8:13 इसलिए यदि **भोजन** मेरे भाई को **ठोकर** खिलाता है तो मैं फिर कभी मांस नहीं खाऊंगा, जिस से **मैं अपने भाई के लिए ठोकर का न कारण बनूं**।

रोमियों 14:10–23 पर तू अपने भाई पर क्यों दोष लगाता है? या फि तू अपने भाई का क्यों तुच्छ जानता है? क्योंकि **हम सब परमेश्वर के न्यायासन के सामने खड़े होंगे**। (11) क्योंकि लिखा है, "प्रभु कहता है, मेरे जीवन की शपथ, प्रत्येक घुटना मेरे सम्मुख टिकेगा, और प्रत्येक जीभ परमेश्वर की स्तुति करेगी।"(12) इसलिए, **हम में से प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा**।(13) अतः हम अब से एक दूसरे पर दोष न लगाएं, पर यह निश्चय कर लें कि **कोई अपने भाई के मार्ग में बाधा या ठोकर खाने का कारण न बने**।

(14) मैं जानता हूं और प्रभु यीशु में मुझे निश्चय है कि कोई वस्तु अपने आप में अशुद्ध नहीं है। परन्तु जो उसको अशुद्ध समझता है, उसके लिए अशुद्ध है।(15) क्योंकि **तेरे भोजन के कारण यदि तेरे भाई को ठोकर लगती है** तो तू अब **प्रेम की रीति पर नहीं चल रहा है**। जिसके लिए मसीह ने अपने प्राण दिया, तू अपने भोजन के द्वारा उसे नाश न कर।(16) अतः जो तेरे लिए भला है, उसकी निन्दा न की जाए। (17) क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना पीना नहीं, परन्तु धार्मिकता, मेल और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा में है। (18) क्योंकि **जो मनुष्य इस प्रकार मसीह की सेवा करता है वह परमेश्वर को ग्रहणयोग्य एवं मनुष्यों में प्रशंसनीय ठहरता है**।(19)इसलिए हम उन बातों में संलग्न रहें जिनसे मेल मिलाप होता है तथा एक दूसरे के जीवन का निर्माण होता है।(20) भोजन के लिए परमेश्वर का काम नष्ट न कर। सब वस्तुएं शुद्ध तो हैं, परन्तु उस मनुष्य के लिए **बुरी हैं** जो अपने खाने से ठोकर पहुंचाता है।(21) **भला तो यह है कि तू मांस न खाए** और **दाखरस न पीए** और **न कोई ऐसा कार्य करे** जिससे तेरे भाई को **ठोकर** लगे।

1 कुरिन्थियों 10:31–33 अतः तुम चाहे खाओ या पीओ या जो कुछ भी करो, सब परमेश्वर की महिमा के लिए करो। तुम न यहूदियों, न युनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया, न किसी के लिए ठोकर का कारण बनो – जिस प्रकार मैं भी सब बातों में सब मनुष्यों को प्रसन्न करता हूं और अपने ही लाभ की नहीं,

परन्तु बहुतों के लाभ की चिन्ता करत हूं कि वे उद्धार पाएं।

यह विचार बिन्दू है – अपना जीवन इस प्रकार जीना कि जिससे किसी को ठेस न लगे या किसी की ठोकर का कारण न बने ताकि "वे उद्धार पाएं"।

2 कुरिन्थियों 6:3–4 हम किसी बात में ठोकर का कारण नहीं बनते जिससे हमारी सेवा पर किसी प्रकार की आंच आए, परन्तु हर एक बात में परमेश्वर के योग्य सेवकों के सदृश अपने आप को प्रस्तुत करते हैं, अर्थात बड़े धैर्य में, क्लेशों में, अभावों में, संकटों में

1 कुरिन्थियों 9:19–23 यद्यपि मैं सब मनुष्यों से स्वतन्त्र हूं फिर भी **मैंने अपने आप को सब का दास बना लिया है** कि और भी अधिक लोगों को जीत सकूं। (20) यहूदियों के लिए मैं यहूदी जैसा बना कि यहूदियों को जीतूं। जो व्यवस्था के अधीन हैं, उनके लिए मैं स्वयं व्यवस्था के अधीन न होने पर भी व्यवस्था के अधीन बना कि जे व्यवस्था के अधीन हैं उनको भी जीतूं।(21) जे व्यवस्थारहित हैं उनके लिए मैं – जो परमेश्वर की व्यवस्था के रहित नहीं परन्तु मसीह की व्यवस्था के अधीन हूं – व्यवस्थारहित – सा बन गया कि जो व्यवस्थारहित हैं उनको जीतूं।(22) मैं निर्बलों के लिए निर्बल बना कि निर्बलों को जीत लाऊं। **मैं सब मनुष्यों के लिएसब कुछ बना** कि किसी न किसी प्रकार कुछ का उद्धार करा सकूं।(23) और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिए करता हूं कि अन्य लोगों के साथ उसका सहभागी बन जाऊं।

कुलुस्सियों4:5–6 समय का सदुपयोग करते हुए **बाहर वालों के साथ बुद्धिमानी से व्यवहार करो**। तुम्हारी बात चीत सदैव अनुग्रहमयी और सलोनी हो कि तुम प्रत्येक व्यक्ति को उचित उत्तर देना जान जाओ।

गलातियों 6:2 एक दूसरे का भार उठाओ और इस प्रकार **मसीह की व्यवस्था को पूर्ण करो**।

अतः **स्वतन्त्रता में स्थिर रहो** जिस कारण मसीह ने हमें स्वतन्त्र(यह स्वतन्त्रता की आपकी अपनी परिभाषा नहीं है) किया है, और 'दासत्व के जुए में फिर न जुतो'। गलातियों 5:1

आमीन